संपादक का नोट

सभी को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सबसे अतुलनीय नाम से अभिवादन करती हूँ।

यशायाह 61:2 ''कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ; कि सब विलाप करनेवालों को शांति दूँ।''

केवल परमेश्वर के जीवित वचन की शक्ति के माध्यम से हम उन लोगों को शांत कर सकते हैं जो शोक में और पीड़ित हैं। लेकिन, दूसरों को तसल्ली देने के लिए, हमें सबसे पहले आत्मारिक रूप से मजबूत होना चाहिए और परमेश्वर के वचन के अनुसार चलना चाहिए। हमारा जीवन दूसरों के लिए एक साक्षी होना चाहिए। तभी, जब हम दूसरों को तसल्ली देते हैं और परमेश्वर के वचन को साझा करते हैं, तो जो भी इसे सुनता है उसका विश्वास बढ़ जाएगा; क्योंकि बाइबल कहता है रोमियों 10:17 ''अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।''

पवित्र बाइबल कहता है यूहन्ना 1:11 में ''वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।'' यीशु मसीह को इस दुनिया में पैदा होने के लिए कोई उचित स्थान नहीं दिया गया था। उनका जन्म एक चरनी में हुआ था। यीशु किसके लिए इस दुनिया में आए थे ? वह अपने लोगों के लिए आए थे। लेकिन उनके अपनों ने क्या किया? उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया और क्रूस पर चढ़ाया। आज, हम सभी मानते हैं कि यीशु हमारे लिए आए और आपके और मेरे लिए अपना जीवन दिया। इसलिए, हमें इस 'शुभसंदेश' को सभी तक फैलाने की जरूरत है, चाहे किसी भी तरह से हमें करना क्यों न पड़े। अगर हमारे पास परमेश्वर की सेवा करने और उनका शुभसंदेश साझा करने का प्यार नहीं है, तो हमारा जीवन किस लायक है? बाइबल कहता है रोमियों 10:14 ''फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें?''

यीशु मसीह ने अपने दूसरे आगमन की भविष्यवाणी पहले ही कर दी है कि वह केवल तभी आएंगे जब परमेश्वर का वचन इस दुनिया के हर कोने में फैल जाएगा। मत्ती 24:14 ''और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा , कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।''

सोचिए अगर हमारे पास सब कुछ है और फिर भी प्रभु हमारे जीवन में नहीं है; तो हमारा जीवन एक बड़ा बेकार जीवन होगा। अगर प्रभु की सुरक्षा हमारे आसपास नहीं है, तो शत्रु हमें टुकड़ों में फाड़ देगा। इसलिए हमारे पराक्रमी प्रभु की छाया के नीचे रहना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि हम, हमारे निकट और प्रिय लोग, और जो

कुछ भी हमारे पास है वह सुरक्षित हो। जैसा कि बाइबल कहता है यूहन्ना 15: 4–5 में ''4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। 5 मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।''

बाइबल लौदीकिया की सभा के बारे में कहता है प्रकाशितवाक्य 3:20 ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।'' इस सभा ने यीशु मसीह को उनके सभा के बाहर रखा और उन्होंने परमेश्वर को भीतर आमंत्रित नहीं किया, क्योंकि वे सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहते थे और न ही उनके ताड़ना और परामर्श ले सकते थे। उन्होंने सभा के बाहर परमेश्वर को खड़ा किया। इसलिए परमेश्वर लौदीकियों की सभा से कह रहे है ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।''

इफिसियों 4:18 ''क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं;'' प्रभु हमारे जीवन में कभी भी जबरन प्रवेश नहीं करेंगे जैसा कि चोर करता है। इसलिए आज अपने हृदयों को कठोर न करें। अपने हृदयों को खोलो और उन्हें आमंत्रित करें, और वह आकर आपके साथ रहेंगे। श्रेष्ठगीत 5: 2 ''मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था। सुन! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है, ''हे मेरी बहिन, हे मेरी प्रिय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मेरे लिये द्वार खोल; क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है, और मेरी लटें रात में गिरी हुई बूंदों से भीगी हैं।'' प्रभु आज भी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं; अगर हम उनकी दस्तक सुनें और दरवाजा खोल दें, तो वह हमारे साथ आने और रहने के लिए तैयार है। वह हमारे साथ अपना निवास स्थान बनाएंगे।

इसलिए मसीह में प्रिय भाइयों और बहनों, जैसा कि हम वर्ष के अंत में आएं हैं; शुद्ध हृदय के लिए प्रभु से प्रार्थना करें, और फिर अपने हृदयों को खोलकर यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में प्राप्त करें, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

मसीह के लिए आत्माओं को जीतो – तुम सितारों की तरह चमकोगे।

फिलिप्पियों 3: 9 ''और उसमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है;'' पौलुस इससे पहले कि वह प्रभु परमेश्वर से मिला, एक घमंडी व्यक्ति था क्योंकि वह बहुत पढ़ा–लिखा और योग्य था, वह अच्छा दिखता था और प्रतिष्ठित बेंजामिन जनजाति से था। लेकिन एक दिन वह प्रभु परमेश्वर से मिला और परिवर्तित हो गया और जिस दिन से उसने प्रभु का प्यार पाया उसका एकमात्र उद्देश्य अन्यजातियों में उस प्रेम को फैलाना था। आइए उसकी गवाही पढ़ें फिलिप्पियों 3: 8–11 ''8 वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ 9 और उसमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है; 10 ताकि मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ 11 कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।'' वचन 8 कहता है कि उसके लिए जीवन में सब कुछ 'व्यर्थ' था। बाइबल में हम इस्राएल के पहले राजा यानी राजा शाऊल की कहानी जानते हैं। शाऊल के राजा बनने के बाद, वह परमेश्वर की आज्ञा के प्रति अवज्ञाकारी था, इस प्रकार प्रभु परमेश्वर ने उसे राजा बनने से हटा दिया। जब हमने प्रभु परमेश्वर को स्वीकार कर लिया है, तो हमें हमेशा उस वचन का पालन करना चाहिए जैसा कि हमने पढ़ा है फिलिप्पियों 3: 9 ''और उसमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है;'' यहाँ, हमने देखा है कि कैसे पौलुस को रूपांतरित किया गया था और प्रभु परमेश्वर से मिलने के बाद उसका जीवन बदल गया और उसके बाद उसने सब कुछ 'व्यर्थ' माना। उसने अपना जीवन केवल वचन के अनुसार जीया। इसके विपरीत, हम राजा शाऊल के जीवन को देखते हैं, वह प्रेरित पौलुस के तुलना में प्रभु के लिए प्यासा नहीं था। इस प्रकार, प्रभु ने उसे इस्राएल का राजा होने से हटाकर दंडित किया। जो लोग प्रभु से प्यार करते हैं और उनकी सेवा करना चाहते हैं, जो लोग उसे खोजते हैं और उसे पाते हैं उन्हें प्रभु के समक्ष हर दिन खुद को परखना चाहिए। हमें अपना जीवन प्रभु को सौंपना चाहिए और हमारे पाप भी उनके लहू से साफ और धुल जाते हैं और हम अकेले परमेश्वर द्वारा ही पवित्र हो जाते हैं। मरकुस 8: 36 कहता है ''यदि मनुष्य सारे जगत को

प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?'' हमारा जीवन प्रभु के लिए बहुत कीमती है, इस प्रकार प्रभु यीशु स्वर्ग को छोड़ कर हमारे लिए इस दुनिया में आए। उनका प्यार किसी भी प्यार की तुलना से परे है जो यह दुनिया हमें दे सकती है। हम नहीं जानते कि हम प्रभु के लिए कितने कीमती हैं। दुनिया के लोग केवल वही देखते हैं जो वे सांसारिक दृष्टिकोण से देख सकते हैं कि किसी के पास कितना बड़ा घर है, उसके पास कितनी संपत्ति है, एक की योग्यता और शिक्षा कितनी अच्छी है। लेकिन, हमारा प्रभु हमारे ह्रदय को देखते है और जो लोग प्रभु का भय मानते है और उनसे प्यार करते है, प्रभु उन लोगों से प्यार करते है जो उनसे प्यार करते हैं और उन का भय मानते हैं। आइए पढ़ते हैं भजन संहिता 4: 3 ''यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रखा है; जब मैं यहोवा को पुकारूँगा तब वह सुन लेगा।'' यहाँ हम पढ़ते हैं कि प्रभु हमारे दिल और दिमाग और आत्मा की जाँच कर रहें है, वह उन लोगों की तलाश करते है जो उनका भय मानते हैं और उनसे प्यार करते हैं, जो उनकी खोज में रहते हैं। आइए हम यह भी पढ़ें भजन संहिता 4: 7–8 ''7 तू ने मेरे मन में उस से कहीं अधिक आनन्द भर दिया है, जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता था। 8 मैं शान्ति से लेट जाऊँगा और सो जाऊँगा; क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है।'' यहां दाऊद कहता हैं कि शहद और दूध से ज्यादा, प्रभु आपने मुझे खुशी दी है। प्रभु हमेशा ऐसे शिष्यों की तलाश में रहते हैं जो उनकी धार्मिकता का पालन करेंगे और इस धरती पर उनका काम करेंगे। जिस तरह दाऊद ने कहा कि अगर दूध और शहद नहीं है, तो भी प्रभु की खुशी काफी है। प्रभु की आंखें हमेशा उन लोगों को खोज रही हैं जिन्हें वह आशीष देना चाहते है और जिन्हें वह इस जीवन में समृद्ध करना चाहते है, इस प्रकार वह शिष्यों की तलाश कर रहें है, जो लोग उनका भय मानते हैं और इस पृथ्वी में उनके काम करेंगे। ऐसे लोगों के लिए, प्रभु का आशीर्वाद पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए है।

प्रभु का शिष्य बनना क्या है? इसका मतलब है कि एक शिष्य प्रभु के वचन का पालन करने वाला होता है। वचन हमेशा कहता है ''प्रभु की आज्ञा का पालन करो'', आइए पढ़ें व्यवस्थाविवरण 4: 40 ''और तू उसकी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ मानना, इसलिये कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरे दिन बहुत वरन् सदा के लिये हों।'' हमें परमेश्वर के वचन का आज्ञाकारी होना चाहिए और वह करना चाहिए जो वह हमसे चाहते है। आइए हम यह भी पढ़ें व्यवस्थाविवरण 8: 11 '''इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे;'' जब हम प्रभु के शिष्य बन जाते हैं, तो यह हमारे जीवन में हमेशा हमारे लिए अनुकूल होता है। जब हम उनकी आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी होते हैं तो प्रभु हमें आशीष देते हैं। यशायाह 65: 22 ''ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएँ और दूसरा बसे; या वे लगाएँ, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएँगे।'' यह हमारे जीवन में प्रभु के वचन का पालन करने और उनकी आज्ञा में चलने के लिए एक महान आशीष है। जब हम परमेश्वर से आशीष प्राप्त करते हैं तो सबसे बड़ा आशीष तब होता है जब हम आत्माओं को उनके राज्य के लिए जीतते हैं। जब हम प्रभु के राज्य के लिए आत्माओं को जीतते हैं, तो हम जीवन में कभी भी कुछ भी नहीं खोएंगे, बल्कि हम केवल लाभ का अनुभव करेंगे। यह तब होता है जब हम प्रभु के प्रेम को भूल जाते हैं, उनकी आज्ञाओं की अवहेलना करते हैं, तब प्रभु हमारे लिए अपने कान और आंखें बंद कर लेते हैं। जैसे हम नहेमायाह की किताब में पढ़ते हैं, कि कैसे इस्राएलियों ने अपने जीवन में

परमेश्वर के प्रेम को जल्दी से भुला दिया। जब उनकी अवज्ञा के कारण उनके जीवन में दर्द और दुःख लौट आया, तो एक बार फिर वे पश्चाताप करने लगे और प्रभु को पुकारना शुरू कर दिया। हमारा प्रभु दयालु और कृपालु है जो हमेशा हमारे लिए क्रोध में धीमे और प्यार से भरपूर है, एक बार फिर अपने लोगों को माफ कर दिया और उन्हें आशीष दिया। वह आज भी वही प्रभु है, वह नहीं बदला है, अगर हम इस धरती पर सब आत्मा को जीतने का काम करते हैं, तो वह हमें नहीं भूलेंगे, हम जो बोएंगे, उसके फल को काटेंगे और उसका सुख भोगेंगे किसी और को इसका सुख नहीं होगा। जो लोग पौधे लगाते हैं, वे खुद ही उसका फल खाएंगे, यह हमारे प्रभु परमेश्वर का वादा है। यह उन लोगों के लिए प्रभु का आशीष है जो उनके नक्शेकदम पर चलते हैं और जो उनके आदेश के आज्ञाकारी हैं। इस प्रकार, सबसे बड़ा आशीष तब है जब हम आत्माओं को उनके राज्य के लिए जीतते हैं। उदाहरण के लिए, एक बार एक लड़का था, जो एक ऊंची पहाड़ी पर चढ़ गया और ऐसी जगह पर बस गया जो समभूमि था और जहाँ से वह पहाड़ी के दूसरी ओर से गुजरती हुई नदी को देख सकता था। वहाँ उसने कुछ अच्छे तराशे हुए पत्थरों को देखा और उसे नदी में फेंकना शुरू कर दिया। इसके तरंग और शोर ने उसे मोहित कर दिया, इस प्रकार उसने अधिक से अधिक पत्थर नदी में फेंकना जारी रखा। अंत में, उसने एक पत्थर उठाया और घर लौट गया। उसने यह कहानी अपने पिता को सुनाई और उसे बताया कि वह नदी में बने पत्थर की आवाज से मोहित हो गया है। उसके पिता ने पत्थर के प्रकार के बारे में पूछताछ की, बेटे ने पिता को पत्थर दिखाया। इस प्रकार पिता ने बेटे से कहा ''ये वास्तव में कीमती और महंगे पत्थर हैं, तुमने इन कीमती पत्थरों को नदी में फेंक कर बर्बाद क्यों किया?'' ठीक इसी तरह, हम भी प्रभु की नजरों में इन पत्थरों की तरह कीमती हैं। वह नहीं चाहेंगे कि हम में से एक भी बर्बाद हो जाए बल्कि वह प्यार करेंगे कि हम सभी उनकी महिमा के लिए अकेले बच जाएं। वह नहीं चाहते है कि हम में से एक भी बर्बाद हो जाए, बल्कि उनके राज्य के लिए बच जाए। इस प्रकार कहा गया है मरकुस 8: 36 ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?'' मनुष्य के लिए यदि वह पूरी दुनिया को हासिल कर ले, और अपनी आत्मा खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा?

हमारा खाता स्वर्ग में है, की हम प्रभु की बचत अनुग्रह के लिए कितनी आत्माएं लाए हैं। दानिय्येल 12: 3 कहता है ''तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों के समान प्रकाशमान रहेंगे।'' सितारों की तरह आसमान में कौन चमकेंगे ? जो लोग प्रभु के राज्य के लिए आत्माओं को जीतते हैं, वे आकाश में सितारों की तरह चमकेंगे, क्योंकि हर आत्मा प्रभु की दृष्टि में अनमोल है। कोई भी आत्माओं को खरीद नहीं सकता है, यीशु मसीह ने अपने जीवन को क्रूस पर बलिदान दिया ताकि वे अपने राज्य के लिए आत्माओं को खरीद सकें। वचन कहता है ''जो लोग प्रभु की अनुग्रह में बहुत से लोगों को बचाकर लाते हैं और धार्मिकता में चलने में मदद करते हैं, वे आकाश में सितारों की तरह होंगे''। इसलिए अगर हमें आकाश में सितारों की तरह चमकना है, तो हमें इस धरती पर कई लोगों को प्रभु की बचाव अनुग्रह पर लाना होगा। जब यीशु इस धरती पर रहते थे, तो वे पूरे दिन एक गाँव से दूसरे गाँव चलकर जाते थे, भले ही वह सिर्फ एक आत्मा को बचाने के लिए क्यों न हो। वे दुनिया से प्रेम करते थे और इस तरह इस धरती पर अपने पिता की इच्छा पूरी की और स्वर्ग में पिता परमेश्वर के दाईं ओर बैठें है। इस धरती पर अपना काम जारी रखने और अपने राज्य के लिए आत्माओं को जीतना जारी रखना अब जीवन में हमारा उद्देश्य होना चाहिए। हमारा कर्तव्य है कि हम 'जीवित वचन' को उन आत्माओं के पास लेकर जाएं, जिन्होंने अभी तक वचन नहीं सुना है और वचन उनके साथ साझा करना चाहिए और उन्हें अंधेरे से प्रकाश में

लाना चाहिए। फिर, एक दिन प्रभु का वादा हमारे जीवन में पूरा होगा। इस दुनिया में संचित धन में से कोई भी हमें स्वर्ग में नहीं ले जा सकता है, लेकिन यह प्रभु के राज्य के लिए किए गए हमारे निरंतर कार्य हैं जो हमें स्वर्ग में ले जाएंगे। आइए हम पढ़ते है दानिय्येल 12: 3 कहता है ''तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों के समान प्रकाशमान रहेंगे।'' हमें इस धरती पर प्रभु यीशु के सेवा को जारी रखने का प्रयास करना चाहिए। जब हम परमेश्वर का कार्य करने के लिए तैयार हैं, तो वह हमें अपनी पवित्र आत्मा और अधिकार से तैयार करेंगे। मत्ती 10: 1 कहता है ''फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।'' जिस तरह यीशु ने अपने बारह शिष्यों को बुलाया और उन्हें अपनी आत्मा और अधिकार दिया कि वे बंदियों को मुक्त कर सकें, टूटे हुए दिल को ठीक कर सकें और बीमार, लंगड़े, अंधे, गूंगे और बहरे को चंगा कर सकें। वह हमें भी तैयार करेंगे, जो प्रभु द्वारा दिए गए पवित्र आत्मा और अधिकार के साथ परमेश्वर की बचाव अनुग्रह को प्राप्त करना चाहते है। जब हम ऐसा करने की इच्छा रखते हैं, तभी प्रभु हमें मनुष्य की कल्पना से परे, इस धरती पर उनका आत्मा उपयोग करने के लिए अपनी शक्तियाँ प्रदान करेंगे। हमारे अंदर प्रभु के कार्य करने के लिए उत्साह और इच्छा होनी चाहिए, वह हमारे लिए रास्ता बनाएंगे। हम जानते हैं कि प्रभु यीशु एक आत्मा को बचाने के लिए एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा करते थे। लेकिन उनका निरंतर उद्देश्य स्वर्गीय राज्य के लिए आत्माओं को जीतना था। आइए हम पढ़ें यूहन्ना 9: 4 ''जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।'' पिता परमेश्वर ने प्रत्येक जीवन को इतना कीमती माना, कि उन्होंने अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को इस धरती पर भेजा ताकि पिता के कार्य करें और उनके राज्य के लिए आत्माएं बचाएँ। इस प्रकार, उपरोक्त वचन में यीशु कहते हैं, ''समय आ रहा है जब हम कोई कार्य नहीं कर पाएंगे, इस प्रकार अब जब हमारे पास समय है, तो हमें उनके पिता के कार्यों को अवश्य करना चाहिए''। प्रभु की इच्छा है कि इस दुनिया में एक भी आत्मा खोना नहीं चाहिए। यीशु मसीह ने अपनी इच्छा पूरी की जब तक कि वह कलवारी के क्रूस पर चढ़ाये नहीं गए थे, अब वह समय है जब हम यीशु मसीह ने जहाँ से छोड़ा था वहीं से हम शुरू करें। परमेश्वर ने इस धरती पर अपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए अपने लोगों के हाथों अपने अधूरे काम दिए हैं। जितना अधिक हम उनकी बचाव की कृपा के लिए लोग लाएंगे, उतना ही अधिक आशीष हम अपने जीवन में प्राप्त करेंगे। हम जानते हैं कि जहाँ कोई चरवाहा नहीं था, यीशु इस दुनिया में भेड़ों की खोज में गए थे। यीशु उनका अच्छा चरवाहा था। लूका 19: 10 ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'' यीशु खोए हुए को खोजते हुए आये और उन्हें अपनी बचाव कृपा में लेकर आएं। मत्ती 18: 15 ''यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया।'' पवित्र शास्त्र में, हमने पढ़ा कि प्रभु ने कैन से पूछताछ की थी, उत्पत्ति 4: 9 ''तब यहोवा ने कैन से पूछा, "तेरा भाई हाबिल कहाँ है?" उसने कहा, "मालूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?'' तुम्हारा भाई हाबिल कहाँ है?'' जिसका कैन ने जवाब दिया ''मुझे कैसे पता चलेगा, क्या मैं अपने भाई का रक्षक हूं?'' यीशु कहते है मत्ती 5: 23–24 ''23 इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिये कुछ विरोध है, 24 तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।'' प्रभु की इच्छा है कि इस धरती पर भाइयों के लिए आपस में प्यार बढ़े। इब्रानियों कहता है 2: 11 ''क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं;

इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता।'' इस धरती पर कई लोग, अभी भी कैन के जैसे जीवन जीते हैं, लेकिन यह वह नहीं है जो प्रभु ने हमारे लिए चाहा है। प्रभु की इच्छा है कि हम एक–दूसरे से प्यार करें और हमारा प्यार एक–दूसरे के लिए बढ़े। इस प्रकार, पिता परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को इस धरती पर भेजा। हमारे लिए प्रभु की इच्छा इस दुनिया में भाइयों के प्यार को बढ़ाना है। आइए पढ़ें मत्ती 12: 50 ''क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और मेरी बहिन, और मेरी माता है।'' एक दूसरे के लिए प्यार हमारे जीवन में, हमारे परिवार में और हमारे सभा में मजबूत बंधन होना चाहिए। यदि यह संबंध मौजूद नहीं है, तो प्रभु कहते हैं, ''इससे पहले कि तुम मेरी वेदी पर चढ़ाओ, जाओ और अपने भाई के साथ अच्छे संबंध स्थापित करो, फिर आओ और मेरे लिए बलिदान चढ़ाओ''। प्रभु की इच्छा है कि हम उसकी हर आज्ञा का पालन करें और इस प्रकार हम भी उसी तरह चले जैसा वह चाहते है। हमें हमेशा उनकी हर आज्ञा का पालन करते हुए, प्रभु के शिष्य होने का प्रयास करना चाहिए। प्रभु की नजर हमेशा उन लोगों पर होती है जो उनकी सेवा करना चाहते हैं और इस धरती पर प्रभु के काम करते हैं। इस प्रकार यीशु ने कहा ''मेरा भाई, मेरी बहन, मेरी माँ कौन है? भीड़ की ओर इशारा करते हुए, यीशु कहते हैं, ''वे मेरे भाई, मेरी बहन और मेरी माँ हैं''। आज भी, प्रभु नहीं बदले है, वह हमसे आज भी, हमारे भाइयों के प्रति प्रेम से वही उम्मीद कर रहे है। प्रभु यीशु मसीह ने हमें अपना कहने में संकोच नहीं किया, लेकिन आज हमें उन्हें अपना भाई कहने में शर्म आती है। जैसे कैन ने हाबिल के बारे में कहा ''क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?'' लेकिन हमारे यीशु मसीह का प्यार हम पर इतना अधिक था, कि उन्होंने पृथ्वी पर एक बढ़ई के परिवार में जन्म लेना चुना, और इस धरती में अपने पिता के कार्यों को जारी रखा। हमारे यीशु ने हममें से हर एक के बारे में कितना मूल्यवान सोचा है। वह हर एक आत्मा के प्रति दयालु और कृपालु है। यह हमारे लिए यीशु मसीह का प्यार है!। इस प्रकार, लगातार उनका एकमात्र उद्देश्य स्वर्ग के राज के लिए आत्माओं को जीतना था। क्रूस पर अपनी अंतिम सांस तक, उन्होंने केवल अपने पिता की इच्छा को पूरा किया। जैसा कि वादा किया था, उन्होंने हमारे लिए एक सहायक को रखा है, उन्होंने हमें प्रचार करने के लिए अपने जीवित वचन को दिया है। इस प्रकार, अब यह हमारी इच्छा भी होनी चाहिए कि हम उनके राज्य के लिए अच्छे कामों को जारी रखें। यह इस धरती पर अकेले उनके बच्चे हैं, जो उनकी इच्छा पूरी कर सकते हैं और उनके काम कर सकते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर ने अब्राहम को जो वादा दिया था ''कि तुम्हारे बच्चों के बच्चे आकाश में तारों के रूप में चमकेंगे'' पूरा होगा। इस पृथ्वी में परमेश्वर के कार्यों को पूरा करने के लिए, अब वह वचन हमारे हाथों में है। हमारा एकमात्र उद्देश्य अब प्रभु की महिमा के लिए अधिक से अधिक आत्माओं को जीतना होना चाहिए।

हम दो बहनों, मार्था और मरियम के बारे में शास्त्र में कहानी जानते हैं। उन दोनों ने यीशु की सेवा की, एक ने खाना बनाया और दूसरे ने यीशु के उपदेश को सुना। इसी तरह, आज भी, हम सभी प्रभु की एक सेवा कर रहे हैं, मैं एक जगह से दूसरे स्थान पर जाकर वचन प्रचार करती हूँ, लेकिन सभा को उनकी प्रार्थनाओं से समर्थन करना चाहिए। इन बैठकों में कई आत्माएँ प्रभु की बचाव अनुग्रह में प्रभु के वचन सुनने के लिए आए। तभी आप अब्राहम के परिवार होने का दावा कर सकते हैं और उनकी महिमा के लिए तारों के रूप में चमकेंगे। यह अभी भी दिन का समय है, इसलिए हमें परमेश्वर के कार्यों को बड़ी दृढ़ता के साथ करना चाहिए, जल्द ही रात होगी तब हम प्रभु के लिए कोई कार्य नहीं कर पाएंगे। इस प्रकार, अंधेरा होने से पहले हमें उनके राज्य के लिए कई आत्माओं को जीतने का प्रयास करना चाहिए। प्रेरितों के काम 10 : 1–3 कहते

हैं ''1 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था। 2 वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। 3 उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास भीतर आकर कहता है, "हे कुरनेलियुस!'' यहाँ हम कुरनेलियुस के विश्वास को देखते हैं, वह प्रभु का शिष्य था और उसका पूरा परिवार प्रभु का भय मानता था। उसने यहूदा के लोगों के लिए बड़े दान भी दिए और उसने उनके लिए प्रार्थना की। इस प्रकार, प्रभु ने हम में से प्रत्येक को भी प्रतिभा दी है और हमें इसका उपयोग करना चाहिए, यदि हम इसका उपयोग नहीं करते हैं तो हम जानते हैं कि उस आदमी के साथ क्या हुआ जिसे प्रभु ने एक तोड़े दी और उसने इसे एक तरफ रख दिया, प्रभु ने उसे दंडित किया और उसे नरक की आग में डाल दिया। जहाँ रोते और दाँत पीसते हैं, जहाँ कीड़े नहीं मरते। प्रभु हम में से हर एक को उस प्रतिभा का लेखा जोखा पूछेंगे जो उन्होंने हमें दी है। लूका 19: 26 कहता हैं, ''मैं तुमसे कहता हूँ कि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।'' अंत में, हमने शाऊल की कहानी देखी है, इससे पहले कि वह प्रभु को जानता था इस दुनिया में केवल खुद के लिए एक नाम बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा था, इस प्रकार उसने प्रभु के बच्चों को भी सताया। लेकिन, एक दिन वह प्रभु से मिला और प्रेरित पौलुस में परिवर्तित हो गया, उसने सोचा कि उसने अतीत में जो कुछ भी किया था, वह 'व्यर्थ' था और उसने इस तरह अपना जीवन पूरी तरह से प्रभु की महिमा के लिए समर्पित कर दिया और फिर वह प्रभु के राज्य के लिए आत्माओं को जीतने का प्रयास करने लगा। इसी तरह, हमें भी अपने जीवन को प्रभु की आज्ञा के अनुसार जीना चाहिए और अपने राज्य के लिए आत्माओं को जीतना चाहिए।

यह संदेश हमारे जीवन में भी आशीर्वाद लाए! प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म.